

सामान्य हिन्दी पुस्तिका

VII

लेखक:

शामुराइलात्पम लोकेन्द्र शर्मा
ब्रह्मचारीमयुम रघुमणि शर्मा



बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एडुकेशन
मणिपुर

Published by :

The Secretary,
Board of Secondary Education,
Manipur

© Board of Secondary Education, Manipur

First Edition : March, 2011

Second Edition : January, 2012

Reprint : December, 2013

Reprint : December, 2015

Reprint : January, 2017

Reprint : January, 2019

Reprint : August, 2020

Copies : 11,000

Price : Rs. 55/-

Printed at : Tamphaton Offset Printing,
Haobam Marak Lourembam Leikai, Imphal West, Manipur

सचिव का निवेदन

वश्व की बदलती परिस्थितियों, वातावरण और परिवेश के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-२००५ (एन.सी.एफ.-2005) के अनुसार पाठ्य पुस्तकों का निर्माण कराकर प्रकाशित करता आ रहा है। शिक्षा को उच्च स्तर तक उठाना इस बोर्ड की कोशिश रही है।

जो पुस्तकें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-२००० के अन्तर्गत लिखकर प्रकाशित की गईं, उनको नये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-२००५ (एन.सी.एफ.-2005) के अनुसार संशोधित तथा परिवर्धित कर समयानुकूल बनवाकर प्रकाशित किया जा रहा है। यह भी लक्ष्य रखा गया है कि मणिपुरी वातावरण के साथ उनका संगत हो। इसलिए पूरी सावधानी रखवाकर पुस्तकों को फिर से तैयार करवाकर प्रकाशित किया जा रहा है। लेखकों और परीक्षण-परिमाण करने वालों के साथ बैठकर काफी गहराई तथा विस्‍तृत रूप से विचार-विमर्श कर पुस्तकों की कमियों और त्रुटियों का परिमार्जन कराकर पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

इस पुस्तक के निर्माण में और छात्रों के द्वारा व्यवहार करवाने में जो समस्याएँ आईं उसका समाधान किया गया है। उसके बाद जो परिणाम सामने आए उन कसौटियों पर मैंने लेखकों और सम्बन्धित व्यक्तियों से परामर्श किया है। इस कार्य में लेखकों तथा सम्बन्धित सज्जनों ने जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

इस पुस्तक को और भी उत्कृष्ट बनाने के लिए जो भी सुझाव सुधीजनों की तरफ से आएंगे उनका सादर स्वागत किया जाएगा। अतः रचनात्मक सुझाव और परिभार्जन के लिए विद्वज्जन अपना सहयोग प्रदान करें।

— डा. चीथूड मेरी थोमास
सचिव

गांधीजी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ । जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा । क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है ।

म. गांधी

लेखक-द्वय की ओर से

प्रस्तुत पुस्तक 'सामान्य हिन्दी पुस्तिका' बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एडुकेशन, मणिपुर द्वारा नेशनल करिक्यूलम फ्रेमवर्क 2005 के आधार पर किए गए पाठ्यक्रम के अनुसार सातवीं कक्षा के लिए प्रथम भाषा/तृतीय भाषा के रूप में तैयार की गई है। इस पुस्तिका में संग्रहीत रचनाओं के चयन करते समय रोचकता, सरलता, स्पष्टता, नीति, राष्ट्रीयता, मानवता, देश-प्रेम, संस्कृति आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है। आशा है कि इसमें विद्यार्थियों में संकलित रचनाओं के प्रति सहज रूचि उत्पन्न होगी, साथ ही उनके चरित्र-निर्माण में भी सहायता मिलेगी।

प्रत्येक पाठ के अन्त में रचनाओं में आए कठिन शब्दों के अर्थ तथा विद्यार्थियों के विषय-ज्ञान के परीक्षण हेतु अभ्यास के लिए प्रश्न दिए गए हैं। आशा है, अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में सहायक सिद्ध होंगे।

— लेखक-द्वय

पुनर्विलोकन व परिशोधन कर्ता
के, किरणकुमार सिंह
कृष्ण शर्मा

अन्तिम निर्णायक :
एस. लनचेनबा मीतै



पाठ-सूची

1.	राजा हरिश्चन्द्र	1
2.	रूलपुइ	7
3.	आज़ाद हिन्द फ़ौज	13
4.	श्रीनिवास रामानुजम – एक विचित्र गणितज्ञ	19
5.	मित्र और मित्रता – कर्म का फल	23
6.	रानी गाइडिन्ल्यू	28
7.	ईसा मसीह	34
8.	भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम – उद्गम और अन्त	39
	मूल कर्तव्य	48
	राष्ट्र-गान	49



पाठ – एक

राजा हरिश्चन्द्र



त्रेता युग में बड़े धर्मात्मा, प्रजापालक तथा कीर्तिमान एक राजा थे। उसका नाम था राजा हरिश्चन्द्र। उनके राज्य काल में कभी अकाल नहीं पड़ा और किसी की अकाल मृत्यु नहीं हुई थी। उनके राज्य में लोग धर्म-परायण होते थे तथा कोई भी लोग धन-लोलुप और मदहोशी नहीं होते थे। एक दिन राजा हरिश्चन्द्र वन में शिकार के लिए निकले। कुछ समय के बाद उन्होंने वन में स्त्रियों की भयभीत भरी आवाज सुनी। राजा ने उसे एक व्यक्ति द्वारा नारियों पर अत्याचार समझा। इसलिए उन्होंने अनजान से अचानक 'दुराचारी, पापाचारी' शब्द कहा। वास्तव में वह आवाज महर्षि विश्वामित्र के योग साधना से भयभीत होकर ही दी गई दिशाओं की विलाप की आवाज थी। राजा हरिश्चन्द्र को यह सब मालूम नहीं था।

राजा का वह शब्द सुनकर महर्षि विश्वामित्र बहुत क्रोधित हुए। तुरन्त विश्वामित्र बोले— ‘दुरात्मा ! वहीं खड़े रहो।’

राजा ने भयभीत होकर विनयपूर्वक महर्षि के चरणों में गिरकर प्रणाम किया और कहा — “भगवन ! आप मेरा अपराध न माने। प्रभो, यह मेरा धर्म था। अपने धर्म की रक्षा में लगे मुझ जैसे राजा पर आपको क्रोधित नहीं होना चाहिए।”

राजा और महर्षि दोनों के बीच धर्म की रक्षा और धर्मशास्त्र के अनुसार दान पर तर्क-वितर्क हुआ। अन्त में विश्वामित्र ने कहा — “ राजन ! अगर तुम राजधर्म की रक्षा हेतु दान देना ही अपना परम धर्म मानते हो तो मैं दान पाने की इच्छा करनेवाला ब्राह्मण हूँ; अपनी इच्छानुसार मुझे दान दो।”



तब राजा ने कहा — “ भगवन ! मैं आपको क्या दूँ ? निस्संकोच कहिए।”

विश्वामित्र ने कहा — “ वीरवर ! तुम स्वयं, तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे पुत्र के अलावा तुम्हारा सब-कुछ मुझे दान में दो।”

महर्षि का वचन राजा ने स्वीकार किया। उनके मुख पर दुख या चिन्ता का कोई निशान नहीं था।

विश्वामित्र ने आगे कहा – “ राजन ! यह नगर, यह भूमि, यह वनस्पति और सारी चीज मेरी हो गई। जहाँ-जहाँ मेरा प्रभुत्व है वहाँ से तुम, तुम्हारी पत्नी और तुम्हारा पुत्र निकल जाओ। और हाँ, जाने से पहले मेरी दक्षिणा देना। मेरी दक्षिणा दिए बगैर तुम जा नहीं सकते।”

कोई उपाय न सूझकर राजा ने अपनी पत्नी शैव्या और पुत्र रोहिताश्व को एक ब्राह्मण के हाथ बेच दिया। इसमें भी विश्वामित्र की दक्षिणा पूरी न हो पाई। अतः उन्हें बाध्य होकर एक चण्डाल के हाथ बिकना पड़ा। वही हुआ जो भाग्य में होना लिखा था। वे अपनी पत्नी और अपने पुत्र से बिछुड़ गए। राजा स्वयं एक चण्डाल के हाथ पड़ जाने के कारण श्मशानघाट पर मृतशरीर से कपड़े संग्रह करने का काम करने लगे। वे काशीपुरी की दक्षिणी श्मशान-भूमि में बने शवगृह में दिन-रात काम करते रह गए। वहाँ के वातावरण और दृश्य भयभीत और दुखभरे थे। राजा वहाँ अपनी पत्नी और अपने पुत्र को स्मरण कर विलाप करते रहे। फिर भी वे सदा सच्चिदानन्द स्वरूप, सम्पूर्ण जगत के सृष्टिकर्त्ता श्री भगवान सत्यनारायण विष्णु, देवराज इन्द्र न्यायके देवगुरु वृहस्पति का स्मरण करना नहीं भूले।

राजा हरिश्चन्द्र बहुत ही दुखित अवस्था में दिन-रात काट रहे थे। उनके शकल-सूरत और रूप-रंग सब बदल गए। उनको पहचान पाना बहुत मुश्किल हो गया था।

उनका पुत्र रोहिताश्व जो अपनी माता के साथ था, एक सर्प के काटने से मर गया था। शैव्या अपने पुत्र रोहिताश्व का मृत-शरीर उस श्मशान घाट पर ले आई जहाँ राजा हरिश्चन्द्र दाह-कर्म कर रहे थे। महारानी शैव्या अपने मृत पुत्र को गोद में लेकर विलाप कर रही थीं। उनका शरीर अत्यन्त दुर्बल हो गया, बाल बिखर गए, धूल जम गई तथा

शरीर की कान्ति मलिन हो गई। वे बार-बार अपने पुत्र को पुकार कर रो रही थीं। राजा हरिश्चन्द्र कफन और कपड़े पाने की आशा से शैव्या के करीब आए, लेकिन दोनों एक दूसरे को पहचान नहीं पाए।



रानी ने विलाप करते हुए कहा— “ हे नाथ ! आप कहाँ हैं ? ओ विधाता ! तूने सब कुछ नाश कर दिया। तूने राजा हरिश्चन्द्र पर कौन-सी दुर्दशा नहीं की !”

रानी का यह वचन सुनते ही राजा ने दोनों को पहचान लिया। उन दोनों की अवस्था देखकर राजा अत्यन्त दुख के कारण मूर्च्छित हुए। रानी भी राजा को पहचान कर और अचानक अपने सामने प्रकट पाते ही धरती पर मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। थोड़ी देर बाद दोनों की चेतना आ गई। रानी दुख से आक्रान्त होकर विलाप करने लगी — “ महाराज, क्या यह सत्य है या स्वप्न ? आप इसे जैसा समझते हैं, बता दीजिए, मेरी बुद्धि भ्रष्ट होती जा रही है।”

राजाने कहा — “ प्रिये, यह सब भगवान की लीला ही समझो। इस वक्त तो देवी-देवताओं का स्मरण करना है; उनका स्मरण करके ही इस बन्धन से हमारी मुक्ति

होगी। इसलिए भगवान का नाम लो और सदा भगवान को स्मरण करो। हम ऐसे ही जीवन भोग रहे हैं, इसके लिए किसी का अपमान नहीं करना है। कभी अभिमान में उस ब्राह्मण की निन्दा नहीं करनी है। तुम अभी उस ब्राह्मण के घर चलो। मैं पुत्र रोहिताश्व के शव को अग्निदाह कर भगवान के प्रति अर्पित कर दूँगा।”

उन दोनों के दुख की सीमा न रही। वे भी संसार से सदा के लिए चले जाना चाह रहे थे। उसी समय देवराज इन्द्र उनके सामने प्रकट हुए और रोहिताश्व को अमृत प्रदान कर फिर से जीवित कराया। उसी समय धर्मराज यम तथा सभी देवतागण उनके सामने आ पहुँचे। सभी ने उन्हें वरदान दिया।

महाप्रतापी विश्वामित्र ने रोहिताश्व को अयोध्या का राजा-अभिषेक किया। सभी नगरवासियों ने देवतागण को प्रणाम किया। महाराजा हरिश्चन्द्र और शैव्या स्वर्ग को चले गए।

कठिन शब्दों के अर्थ—

अकाल	=	अशुभ समय, अभाव, भुखमरी।
दुरात्मा	=	दुष्ट प्रकृतिवाला, नीच।
निस्संकोच	=	संकोचरहित।
बाध्य	=	पीड़ित, मजबूर, विवश।
विलाप कर रही थीं	=	बिलख-बिलख कर रो रही थीं।
कान्ति	=	सौंदर्य, चमक।
करीब	=	पास, निकट।
आक्रान्त	=	जिसपर हमला किया गया हो।
भ्रष्ट होती जा रही है	=	मार्ग से विचलित होती जा रही है, ध्वस्त होती जा रही है।
भोग	=	कर्मफल भोगना।
अपमान	=	तिरस्कार, निरादर।

प्रश्न-अभ्यास

1. अनजान ही किए गए कार्य से राजा हरिश्चन्द्र को क्या फल मिला ?
राजा ने क्या सोचकर वह कार्य किया था?
2. महर्षि विश्वामित्र क्रोधित क्यों हुए और उसने क्या किया ?
3. महर्षि विश्वामित्र ने राजा हरिश्चन्द्र से दान में क्या माँगा ?
4. दान लेकर महर्षि विश्वामित्र ने राजा से क्या करने के लिए कहा ?
5. दान देने के बाद राजा हरिश्चन्द्र, शैब्या और पुत्र रोहिताश्व के जीवन में हुई स्थितियों को संक्षेप में लिखिए।
6. राजा हरिश्चन्द्र ने शैब्या के प्रति क्या आश्वासन दिया ?
7. राजा हरिश्चन्द्र के जीवन से आपको क्या प्रभावित होता है ?
8. 'राजा हरिश्चन्द्र अपने किए का फल भोग रहे थे।'
आप इससे सहमत है या नहीं ? अगर सहमत है या असहमत है तो क्यों ?



पाठ – दो रूलपुइ

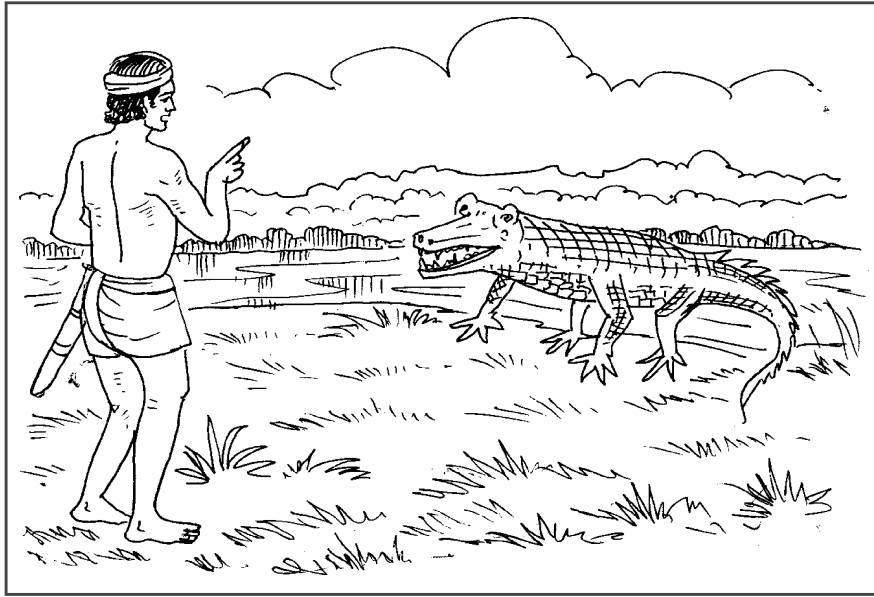
विश्व भर की लोक कथा साहित्य के पन्नों में अजगर से सम्बन्धित कई कथाएँ होती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि आदि काल में अजगर की संख्या बहुत थी और लगता है कि आजकल इसकी संख्या बहुत घट गई हो। उनकी गतिविधि भी आज जो हो रही है इसकी तुलना में कई गुना रही होगी। अजगर घने जंगलों, सुनसान जलाशयों में तथा ऊँचे पर्वतों पर पाए जाते थे।

लुसाइ में भी अजगर से जुड़ी हुई कथाएँ बहुत ही प्रचलित हैं। बहुत ही पुराने जमाने की बात है; लुसाइ पहाड़ के चरण में एक छोटा-सा गाँव बसा हुआ था। गाँव के लोग पहाड़ पर साग-सब्जियाँ तथा अन्य खाद्य पौधे लगाते थे। जंगलों में फल-फूल आदि भी बहुत मिलते थे। उन लोगों को दुखों और परेशानियों की कोई गुंजाइश नहीं थी। सब लोग आनन्दपूर्वक रहते थे।

लुसाइ भाषा में अजगर को 'रूलपुइ' कहते हैं। एक दिन एक बड़ा भयानक और अतिकाय रूलपुइ पहाड़ से नीचे आया। उसका शरीर इतना लम्बा था कि कोई पूँछ के पास खड़े होकर देखे तो उसका सिर देख नहीं पाता था। शरीर इतना बड़ा और मोटा था कि वह बरगद के पेड़ जैसा दिखता था। उसकी दोनों आँखें तो जलती आग जैसी थी। उसका जीभ निकालता तो तलवार जैसा लगता था।

जो कोई भी उसके सामने आता उन सब को रूलपुइ निगल जाता। बकरी, भेड़िया, बछड़ा और अन्य पशु-पक्षी सब के सब एक-एक कर निगलना तो उसके लिए मामूली बात

थी, बड़े-बड़े पशु गाय, बैल, भैंस आदि को भी नहीं छोड़ता। ऐसी स्थिति में लोग हाहाकार करने लगे हुए। गाँव के सभी लोग विचार करने लगे। यदि इस तरह का काम जारी रहा तो सारा गाँव एक दिन मिट जायगा। इसलिए रूलपुइ के साथ एक समझौता करना चाहिए।



गाँव के लोगों ने रूलपुइ के साथ एक बात तय कर ली कि उसको हर दिन भोजन के लिए एक-एक पशु या मनुष्य दिया जाएगा। इसलिए इसी प्रकार का मारना, खाना छोड़ दो। अगर जिस दिन गाँववालों ने यह बात तोड़ दी तो उस दिन से इस गाँव के किसी भी प्राणी पर तुम्हारा पूरा अधिकार होगा। उस समझौते के अनुसार काम जारी रहा। कुछ महीनों के बाद उस गाँव के सभी पशु रूलपुइ के मुँह में चले गए। सारे पशु समाप्त हो जाने के बाद अब मानवों की बारी आई। इसलिए हर दिन एक-एक मनुष्य ने उस अजगर के भोजन में प्राण त्याग दिए।

एक दिन एक परदेशी उस गाँव में आया। वह चीन का रहनेवाला था। शाम हो गई, इसलिए उसने रात को एक घर में ठहरने का विचार किया। वह एक घर में आया और उस रात को वहीं काट कर सुबह को चले जाने की बात कही। वह उस घर में रहा। रात को उस घर के दंपति दुख भरी आवाज में रो रहे थे। रोने की आवाज सुनकर परदेशी अतिथि ने पूछा – “आप दोनों क्यों रो रहे हैं?”



उन्होंने उत्तर दिया – “ अतिथि महाशय, हमारे इस गाँव में एक बड़ा और भयानक रूलपुई है। उसके साथ किये एक समझौते के अनुसार प्रतिदिन एक पशु या एक मनुष्य उसके भोजन के लिए दिया जाता है। कल के लिए रूलपुई के भोजन की बारी हमारी हैं। हमारा केवल एक ही पुत्र है। कल हम उसे मृत्यु के मुँह में ढकेल रहे हैं। इससे ज्यादा दुख और क्या हो सकता है ? इसलिए हम रो रहे हैं।”

अतिथि ने कहा – “ बस, इस मामूली बात के लिए आप दोनों रो रहे हैं।”

अतिथि की इस बात को सुनकर दोनों आश्चर्य में पड़ गए और सोचने लगे कि इस अतिथि ने इतनी गंभीर बात को मामूली क्यों कहा है ? क्या वह पागल तो नहीं है ?

अतिथि ने उन दोनों के मन की बात समझ ली। उसने कहा— “ सच है, आप दोनों को परेशान होने की कोई बात नहीं है। आँसू पोंछ लीजिए और बेफिक्र रहिए। खाने-पीने की तैयारी कर खाइए और मेरे लिए भी कुछ दीजिए। इसके बाद जो भी करना है वह सब मेरा काम है। मुझ पर भरोसा रखिए; मैं सब सम्भालूँगा।”

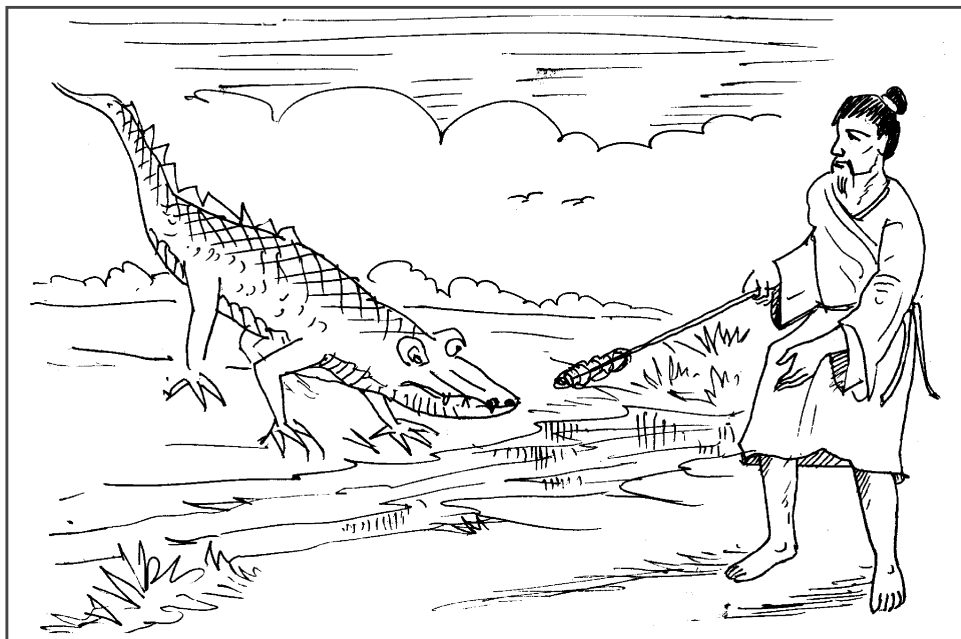
उन्होंने जल्दी से भोजन तैयार करके अतिथि सत्कार किया। अतिथि ने पूछा— “क्या आपके यहाँ भाला होगा ? अगर है तो मुझे दीजिए। घरवाले ने एक तेज और भारी भाला निकाल कर दिया। अतिथि ने फिर कहा— “आपके बेटे के कुछ पुराने वस्त्र होंगे, वे भी मुझे दीजिए।”

घरवालों ने खुशी से कुछ कपड़े दिए। अतिथि ने उसे भाले पर लपेट लिया। रात हो गई। वे सब रात को आराम से सोए।

अगले दिन अतिथि ने घरवालों के साथ खाना खाया। अतिथि रूलपुड़ के पास देर से गया। वहाँ पहुँचते ही रूलपुड़ ने उससे पूछा — “कौन है ?”

अतिथि ने उत्तर दिया — “मैं हूँ, तुम्हारा भोजन।”

रूलपुड़ ने फिर पूछा — “इतनी देर क्यों हुई ? मेरे पेट में तो चूहे दौड़ रहे हैं। लम जानते नहीं, तुम्हारे न आने से सारा गाँव नष्ट होनेवाला है।”



उस समय अतिथि ने थोड़े अस्पष्ट शब्द कहकर अपनी कमीज निकाली और भाले पर फिर से लपेट कर रूलपुइ के मुँह में फेंक दिया। रूलपुइ ने अपना भोजन समझ कर उसे निगल लिया। थोड़ी देर बाद रूलपुइ बड़ी जोर की आवाज के साथ मर गया। उस आवाज को सुनकर सभी गाँववाले वहाँ इकट्ठे हुए जहाँ रूलपुइ मरा पड़ा था। मरे हुए भयानक रूलपुइ को देखकर गाँववाले अत्यन्त खुश हुए। उन्होंने उस परदेशी अतिथि का पुनः स्वागत किया और उसकी बड़ी प्रशंशा की।

कठिन शब्दों के अर्थ—

जलाशय	= जल भरा हुआ गहरा स्थल, तालाब, झील।
खाद्वय	= खाने की चीज, खाने योग्य।
गुंजाइश	= स्थान, जगह, सामर्थ्य
अतिकाय	= बहुत बड़ा।
हाहाकार	= घबराहट की चिल्लाहट, कुहराम।
समझौता	= आपस का करार या निश्चय, निपटारा।
तय कर ली	= निश्चित कर ली, निर्णय कर ली।
आँसू पोंछ लीजिए	= धीरज बँधाइए।
बेफिक्र	= बेपरवाह, निश्चिन्त।
भाला	= एक प्रकार का हथियार, बरछा।
लपेट लिया	= घेर कर बाँध लिया, समेट लिया।
अस्पष्ट	= जो साफ न दिखाई दे; समझ में न आए, धुँधला।
निगल लिया	= घोंट लिया, खा जाना।
पुनः	= फिर, दोबारा।

प्रश्न-अभ्यास

1. लुसाइ पहाड़ के आस-पास के गाँव में रूलपुइ ने क्या-क्या किए ? गाँववालों और रूलपुइ के बीच क्या निर्णय हुआ ?
2. परदेशी अतिथि कहाँ का रहनेवाला था ? रात को जिस घर में वह ठहरा था उस घर की दुख-दशा कैसी थी ?
3. “ बस, इस मामूली-सी बात के लिए आप दोनों रो रहे हैं। ” वह ‘मामूली-सी बात’ क्या थी ? क्या अतिथि उस बात को मामूली प्रमाणित कर सका ?
4. परदेशी अतिथि ने रूलपुइ को कैसे मारा ?
5. अतिथि ज्ञानी है अथवा वीर ? सोदाहरण उत्तर लिखिए।
6. अपने माँ-बाप से पूछ कर मणिपुर की लोक-कथाएँ समझ लीजिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
7. क्या आपने अजगर को कहीं देखा है ? अजगर के बारे में दस-पन्द्रह पंक्तियाँ लिखिए।
8. लुसाइ पहाड़ कौन-से राज्य में स्थित है ? उत्तर-पूर्वी भारत का एक मानचित्र खींचकर उसमें लुसाइ पहाड़ निर्धारित कीजिए।



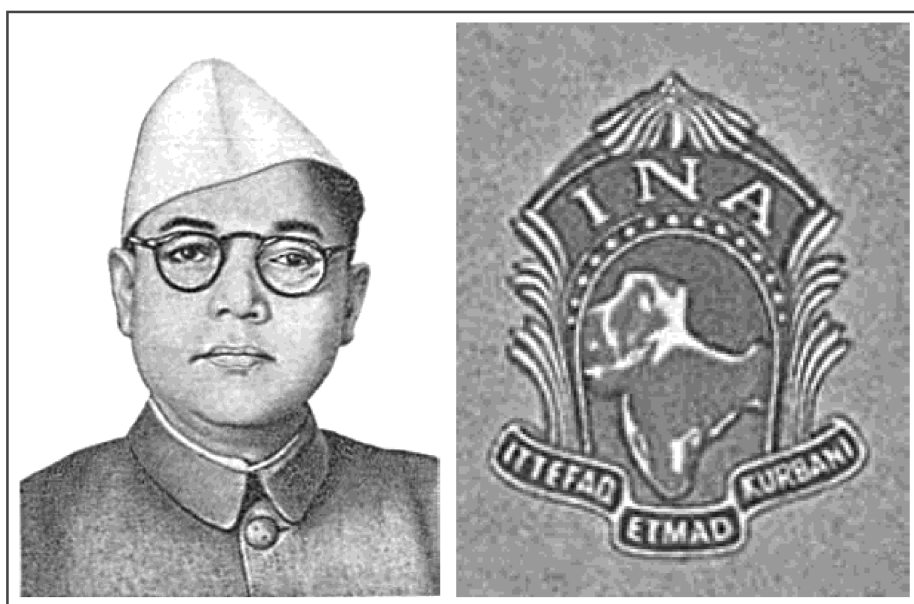
पाठ – तीन आज़ाद हिन्द फ़ौज



रास बिहारी बोस

द्वितीय महायुद्ध के दौरान स्वतंत्रता आन्दोलन का सब-से महत्वपूर्ण कदम था आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन। आज़ाद हिन्द फ़ौज को आई.एन.ए.के नाम से भी जाना जाता है। रास बिहारी बोस जो एक भारतीय क्रान्तिकारी थे, भारत से फ़रार होकर जापान में कई सालों से रहने लगे थे। जापान में उन्होंने 'इंडियन इण्डेपेण्डन्स लीग' नामक एक संस्था खोली। इस लीग में दक्षिण पूर्वी-एशियाई भारतवासियों ने भाग लिया। जापान में युद्धबन्दी के रूप में रखे गए हजारों भारतीय अंग्रेजी फौजी इस लीग में शामिल होकर भारत के स्वतंत्रता-आन्दोलन में भाग लिये। जापानियों ने ब्रिटिश

फौजियों को डराकर दक्षिण-पूर्वी एशिया के अधिकांश प्रदेशों को उनके कब्जे में रखा। उस समय इण्डियन इण्डेपेण्डन्स लीग ने जापान में 'आज़ाद हिन्द फौज' की स्थापना करने की व्यवस्था शुरू की।



भारत को ब्रिटिश से कब्जे के मुक्त कराना ही उस लीग के सदस्यों का उद्देश्य था। जनरल मोहन सिंह जी ब्रिटिश इण्डियन आर्मी में थे, आज़ाद हिन्द फ़ौज की देख-भाल में प्रमुख भूमिका निभाते थे। गांधी जी, बाबू राजेन्द्र तथा अन्य नेताओं ने सत्य और अहिंसा के मार्ग से आगे बढ़ने का प्रयत्न किया था, लेकिन सुभाष बाबू ने ब्रिटिश सरकार को भगाने के लिए सरकार के विरुद्ध अस्त्र-शस्त्र प्रयोग करने की आवाज उठाई थी। फलतः सुभाष को पकड़ा गया और जेल में बन्द कर दिया गया। जेल में सुभाष ने अनशन शुरू किया। सरकार ने मज़बूर होकर कूटनीति से उनको छोड़ तो दिया, मगर उन्हें अपने घर में ही नज़रबन्द कर दिया। चारों तरफ सरकारी पुलिस की बड़ी कड़ी नज़र रखी गई।

सन् 1941 को एक दिन वे शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार की खुफिया पुलिस की आँखों में धूल झोंक कर एक गूँगे पठान के वेश में नज़रबन्द घर से निकल कर पेशावर,

काबूल और वहाँ से बर्लिन होते हुए सिंगापुर पहुँचे। सिंगापुर से जापान पहुँच कर उन्होंने जापान तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया में रहनेवाले भारतवासियों की सहायता से आजाद हिन्द फ़ौज को दृढ़ और शक्तिबर्धक बनाया। आगे चल कर 21 अक्टूबर, 1943 को आजाद हिन्द फ़ौज की सरकार प्रतिष्ठापित की गई। आज़ाद हिन्द सरकार का शासन सुसंगठित रहा तथा इसके बीस करोड़ रूपए की पूँजी भी थी। इस सरकार ने अपने निजी स्टाम्प और सिक्का भी चलाए थे। स्टाम्प तथा सिक्कों का सही रूप आइ.एन.ए. मोइराइ में सुभाषचन्द्र बोस मेमोरियल संग्रहालय में देखने को मिलेगा।



उस समय आज़ाद हिन्द फ़ौज में पचास हजार सुशिक्षित और सुसंगठित सैनिक थे। उनका नारा था “जय हिन्द”। यह नारा आज हमारे राष्ट्र का परम पवित्र मंत्र बन गया है। इस समय सुभाष की पुकार थी – “तुम मुझे अपना खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।” सन् 1944 की शुरुआत में सुभाषचन्द्र बोस, जो नेताजी के नाम से प्रसिद्ध थे, जापानी फ़ौज के कब्ज़े में रहे आन्दामान द्वीप पुँज में गए थे। उस द्वीप में भी उन्होंने सेनाएँ इकट्ठी कीं। उनका विश्वास था कि जापानी फ़ौजों की सहायता से भारत की जमीन पर युद्ध करके ब्रिटिश को भगा सकेंगे और भारत को स्वतंत्रता दिला सकेंगे। लेकिन अलग विचारवाले भारत के राष्ट्रवादि जापानी युद्धकारियों पर विश्वास नहीं करते थे। फिर भी जापान ने वर्मा पर आक्रमण किया तब सुभाष भी अपनी फ़ौज लेकर ब्रिटिश मोर्चे पर टूट पड़े। वे इस तरह टिड्डिम रोड होते हुए वर्तमान नागालैण्ड की राजधानी कोहिमा की यात्रा में सर्वप्रथम मोइराड में ठहरे थे और इम्फाल होते हुए कोहिमा की तरफ चल पड़े। उसी यात्रा में उनके नारे थे – “दिल्ली चलो” तथा “जय हिन्द”। आज़ाद हिन्द फ़ौज में महिलाओं का भी एक अलग रेजिमेन्ट लक्ष्मी स्वामीनाथन के नेतृत्व में निर्माण किया। उस रेजिमेन्ट का नाम “रानी झाँसी रेजिमेन्ट” था।



कालांतर में दुर्भाग्य से जापान के हिरोशिमा और नागासाकी, दो शहरों पर परमाणु बम गिराने से जापान की सारी शक्ति धूल में मिल गई तथा इस द्वितीय महायुद्ध में जापान की हार हुई। जापान की पराजय के साथ आज़ाद हिन्द फ़ौज भी केवल इतिहास के पन्ने में रह गई और एक अजीब नाटकीय ढंग से सिंगापुर से जापान के हवाई-मार्ग में अकारण दुर्घटना में सुभाष की मृत्यु हो गई। आज तक उनकी मृत्यु के बारे में काफी विवादग्रस्त विचार होते रहे हैं।

कठिन शब्दों के अर्थ—

दौरान	= काल चक्र, दिनों का फेर।
गठन	= बिखरी हुई शक्ति को इकट्ठा करना।
फरार होना	= भाग जाना(अपराध करके), चम्पत होना।
क्रब्जे में	= अधिकार में।
भूमिका	= पृष्ठभूमि।
अनशन	= उपवास, आहार त्याग।
कूटनीति	= छिपी हुई चाल, गुप्त चाल।
नज़रबन्द	= एक स्थान में कैद, नज़रबन्दी की सजा प्राप्त।
खुफ़िया	= छिपा हुआ, गुप्त।
आँखों में धूल झोंक कर	= छल कर, धोखा देकर।
पूँजी	= जमा किया हुआ धन, आय देने हेतु व्यवसाय में लगाया धन।
नारा	= जोर का शब्द, बुलंद की जानेवाली सामूहिक आवाज।
कालांतर	= अपने समय के बाद होनेवाला, अंतराल, नियत समय के बाद का समय।
विवादग्रस्त	= विवाद में फँसा हुआ।

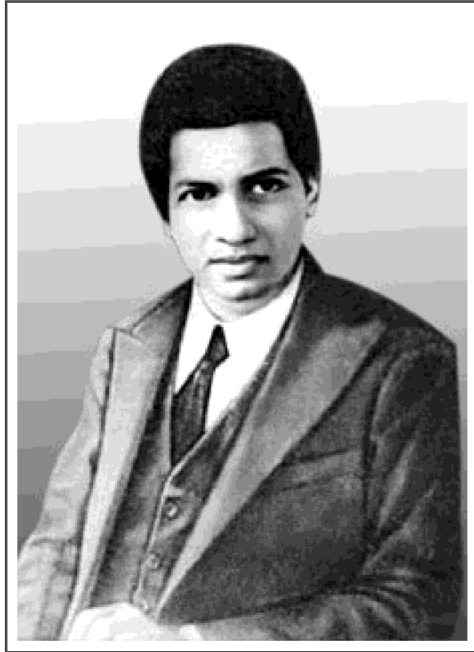
प्रश्न-अभ्यास

1. रास बिहारी बोस कौन थे ? उन्होंने कौन-सी संस्था खोली थी ? उस संस्था के सदस्य कौन-कौन थे ?
2. भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने में सुभाषचन्द्र बोस और महात्मा गांधी जी के विचारों को लिखिए और दोनों में क्या मतभेद है ?
3. आज़ाद हिन्द फ़ौज की स्थापना कब और कहाँ हुई थी ? इसका उद्देश्य क्या है ?
4. सुभाषचन्द्र बोस का नारा क्या है ? किस रास्ते में होकर वे जापान पहुँचे और वहाँ उन्होंने क्या किया ?
5. आज़ाद हिन्दी फ़ौज में कौन-सी अन्य रेजिमेन्ट थी ? उस रेजिमेन्ट का क्या नाम था और किसने उसका नेतृत्व किया ?
6. आज़ाद हिन्द फ़ौज के गठन की कहानी संक्षेप में लिखिए।
7. भारत के दस देश भक्त स्वतंत्रता सेनानियों के नाम लिखिए।
8. 'दिल्ली चलो तथा जय हिन्द' नारे के साथ नेताजी जिस रास्ते से होकर कोहिमा पहुँचे, उस रास्ते को उत्तर-पूर्वी भारत का एक मानचित्र खींच कर निर्धारित कीजिए।
9. जापान के दो शहरों हिरोशिमा और नागासाकी में बम गिराने की कहानी अपने माँ-बाप अथवा अध्यापक से पूछ कर दस वाक्यों में लिखिए।



पाठ – चार

श्रीनिवास रामानुजम – एक विचित्र गणितज्ञ



गणित के क्षेत्र में रामानुजम का नाम न जाननेवाला व्यक्ति मिलना बहुत मुश्किल होगा। गणित के खजाने में रामानुजम एक विचित्र इन्सान है। उनकी बुद्धि बहुत तेज थी। जब वे तीसरी कक्षा में पढ़ रहे थे तब उन्होंने बारहवीं कक्षा का पाठ्यक्रम पूरा कर लिया था। बाहर वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने बी.ए. की कक्षाओं के लिए लोनी की लिखी हुई पुस्तक 'ट्रिगोनोमैट्री' के सभी सवालों को हल कर डाला।

गणितज्ञ रामानुजम का जन्म 22 दिसम्बर, 1887 को मद्रास (तामिलनाडू) राज्य के इरोद नामक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण के घर में हुआ था। सन 1898 में वे प्राथमिक

परीक्षा में सर्वप्रथम आए थे। उन्होंने छोटी उम्र में आयलर के सिद्धान्तों को अपने आप समझ लिया था। बिना किसी प्रोफेसर या गणितज्ञ की सहायता के इसके कठिन प्रश्नों का हल इन्होंने किया था। गणित के क्षेत्र में उनका ज्ञान अपार था। उनके ज्ञान पर विद्वान लोग चकित रह गए थे।

उनके विचित्र ज्ञान की पहचान में तत्कालीन सरकार ने उन्हें छात्रवृत्ति दी थी। वे दसवीं कक्षा की परीक्षा तो उत्तीर्ण हुए लेकिन बारहवीं कक्षा में तो अंग्रेजी में फेल हो जाने के कारण परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए थे। फलस्वरूप सरकार की ओर से दी गई छात्रवृत्ति भी रद्द कर दी गई। बेचारे को गरीबी ने मारा। फिर भी उन्होंने अपने जीवन-काल में गणित संबंधी बहुत-सी खोजें निकाल कर लोगों के सामने रखीं। कहा जाता था कि एक बार वे तीसरी कक्षा में पढ़ रहे थे तब गणित के एक अध्यापक ने ऐसा सिखाया कि यदि किसी संख्या को उसी संख्या से भाग किया जाए तो उसका भागफल एक होता है। यह बात सुनते ही उन्होंने पूछा— “क्या यह नियम शून्य के सम्बन्ध में भी लागू होगा?” उनकी बात सुनकर अध्यापक चकरा गया।

रामानुजम का मन सदा गणित की खोजों में लगा रहता था। गरीबी के कारण उनकी पढ़ाई में बहुत सारी बाधाएँ आई और उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। पेट पालने के लिए उन्होंने प्राइवेट-ट्यूशन किया। घर-बार में वे हमेशा लगे रहे। लेकिन वे अपनी जेब में एक छोटी-सी नोट-बुक लिया करते थे और अपनी खोज में जो कुछ मिलें वह लिखा करते थे। हर आदमी को जीने के लिए धन की जरूरत होती है। रामानुज भी जीने के लिए धन प्राप्त करना चाहते थे, परन्तु वे लोभी नहीं थे। वे धन और प्रतिष्ठा के भूखे नहीं थे, गणित संबंधी खोजों के भूखे थे। इसलिए वे केवल खोजों में मन लगाते थे। ट्रिनिटी कॉलेज के फैलो डॉ. जी. एच. हार्डी उनकी खोजों पर बहुत प्रभावित हुए। वे उनकी खोज से इतने प्रभावित हुए कि उनको अपनी गणित संबंधी खोजों के लिए इंग्लैण्ड भेजा। अगर डॉ. हार्डी से उनकी मुलाकात न होती तो दुनिया उनकी सेवाओं का फायदा न उठा पाती।

इंग्लैंड में रहकर भी उन्होंने भारतीयता को नहीं छोड़ा था। इंग्लैंड की जल-वायु उनकी तंदुरुस्ती से मेल नहीं खाती थी। अतः वे बीमार पड़ गए। इंग्लैंड के अच्छे-अच्छे अस्पतालों में उपचार किया गया। उपचार का अच्छा फल मिला कि वे थोड़े बहुत ठीक हो गए। आश्चर्य की बात थी कि आप कम उम्र में ही रोयल सोसाइटी के फैलो बन गए। हम गर्व करते हैं कि रामानुजम महान और प्रथम भारतीय थे जिसे यह सम्मान मिला था। रामानुजम कठिन से कठिन गणित के सवालों को जिसे दूसरे लोग हल करने में घण्टों लगते थे, बातों-बातों में हल किया करते थे। डॉ. हार्डी ने उनकी तुलना आयलर तथा जैकेनी से की थी। उन्होंने जितने धन कमाये, सब समाज-कल्याण के कामों में लगा दिए थे। विश्व प्रसिद्ध महान

JdUVk am n20_ H\$ _# v26 अप्रैल, 1920 में चेतपुरा गाँव में हुई थी।

आपने 'संख्याओं की सीमांसा' पर खोजें की थी वे एक पुस्तक के रूप में सन् 1927 में कैम्ब्रिज से प्रकाशित हो कर मरणोपरान्त निकली।

कठिन शब्दों के अर्थ—

इन्सान	= आदमी, मनुष्य, मानव।
तत्कालीन	= उस समय का, उन दिनों का।
रद्द कर दी गई	= उठा दी गई, मिटा दी गई।
भाग	= संख्या विशेष को कई अंशों में बाँटने की क्रिया।
लागू होना	= चरितार्थ होना, संबद्ध होना।
चकरा गया	= चकित हुआ, चक्कर में पड़ा।
घर-बार	= घर, गृहस्थी, परिवार।
प्रतिष्ठा	= मान, मर्यादा, यश।
प्रभावित हुए	= प्रभाव पड़े हुए।
तन्दुरुस्ती	= स्वास्थ्य।
उपचार किया	= इलाज किया, बीमार की सेवा करना।

प्रश्न-अभ्यास

1. छोटी उम्र में रामानुजम ने क्या-क्या करके विद्वानों को चकित कराया ?
2. रामानुजम के घर की स्थिति कैसी थी ?
3. पाठ में निहित वाक्यों को खोजकर लिखिए जिससे यह स्पष्ट हो जाय कि रामानुजम गणित-संबंधी बातों की खोज में दिलचस्पी लेते थे।
4. रामानुजम के गणित की खोज से कौन प्रभावित हुए थे ? उनके किस काम से दुनिया के लोगों को क्या फायदा मिलता था ?
5. हम रामानुजम पर क्यों गर्व करते हैं ?
6. 'गणितज्ञ रामानुजम' पाठ के आधार पर रामानुजम की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
7. भारत का एक मानचित्र खींच लीजिए और उसमें रामानुजम का जन्मस्थान इरोद निर्धारित कीजिए।
8. रामानुजम के चरित्र में विद्यमान एक गुण जो आपको बहुत प्रभावित करता हो, चुनकर कारण सहित लिखिए।

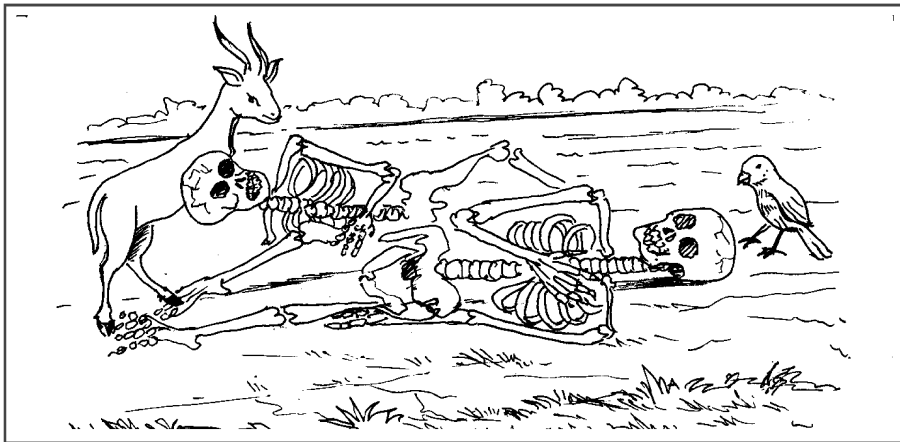


पाठ – पाँच

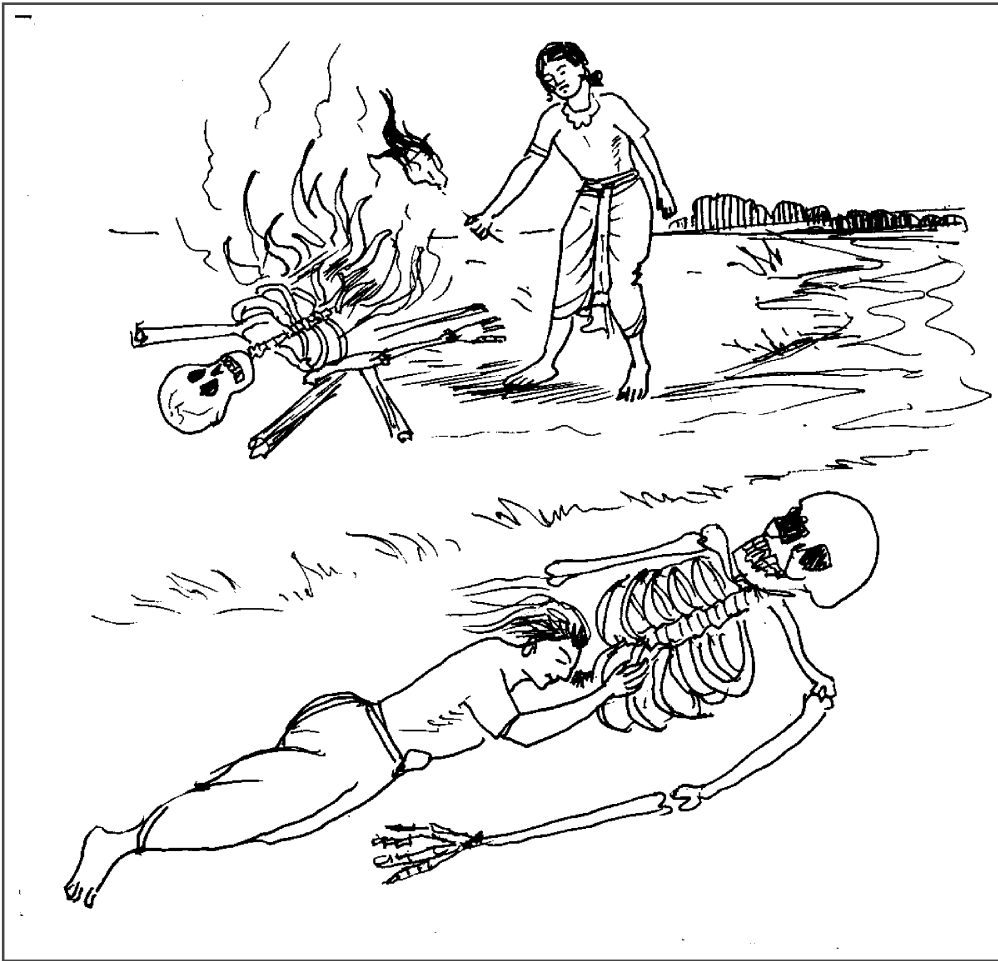
मित्र और मित्रता – कर्म का फल

कहा जाता है – मित्र मिलना आसान है, पर मित्रता का पालन करना कठिन काम है। वैसे ही सच्चा मित्र पाना भी उतना ही कठिन है जितना निभाना।

बहुत पुराने जमाने की बात है, किसी एक देश में एक राजा और एक सामन्त रहते थे। दोनों के एक-एक पुत्र थे। उन दोनों की मित्रता इतनी अच्छी रही कि दोनों की मित्रता लोगों के लिए उल्लेखनीय हो गई। वे दोनों एक साथ अध्ययन करते, साथ-साथ खाते, घूमते और काम करते थे। एक साथ वे दोनों विदेश में जाकर अध्ययन करते थे। उन दोनों ने इतना गहरा अध्ययन किया कि राजकुमार अपने शरीर को त्याग कर एक स्वर्णिम शुक का रूप तथा सामन्तकुमार एक स्वर्णिम हिरण का रूप धारण कर सकने लगे। दोनों आपस में एक दूसरे की विद्या की प्रशंसा करते थे। उन्होंने विचार किया कि उनका विद्याध्ययन समाप्त हो गया है, घर छोड़कर विदेश में रहते अधिक समय हो गया है, अब घर वापस जाना चाहिए। यही सोचकर वे घर की तरफ वापस आ गए।



आते-आते कुछ दिनों बाद घर पहुँचने में कुछ समय रह गया तब सामन्तकुमार ने राजकुमार से कहा— “ मित्रवर, अब हम घर पहुँच रहे हैं, अपनी अपनी विद्या की परीक्षा कर देखें।” “ सही है मित्रवर, देखना चाहिए।”— राजकुमार ने कहा। “ तब तो तुम पहले विद्याभ्यास कर दिखाओ।”— सामन्तकुमार ने कहा। राजकुमार ने राजी होकर अपना अस्थि-पंजर छोड़कर एक स्वर्णिम शुक का रूप धारण कर लिया और एक पेड़ की डाली पर जा बैठा। उस समय सामन्तकुमार भी एक स्वर्णिम हिरण का रूप धारण कर कुछ समय उछल-कूद कर खेलता रहा। इसके तुरन्त बाद स्वर्णिम हिरण का रूप धारण करने वाले सामन्तकुमार ने राजकुमार के अस्थि-पंजर को आग में जला दिया।



सामन्तकुमार का स्वार्थ परायण वाला काम देखकर स्वर्णिम शुक के रूप धारण करनेवाले राजकुमार ने कहा – “ मित्रवर, तुमने अपने एक मित्र से विश्वासघात किया। तुम कितने निष्ठुर व्यक्ति हो। तुमने मित्रता तोड़ दी। जाओ, तुम सुख और शान्ति से जीओ। लेकिन याद रखो, एक दिन सच्चाई तुमको मार डालेगी, यह कहकर स्वर्णिम शुक रोते-रोते उड़ गया।



सामन्तकुमार राजकुमार के रूप में राजमहल में आ गया। उस दिन से उसने तोता मारना शुरू किया। स्वर्णिम शुक को सामन्त कुमार का हिंसात्मक काम ज्ञात हुआ। स्वर्णिम शुक अपने मित्र के निर्मम काम को अपनी पत्नी से चुपचाप बता देने का मौका ताकता रहा। एक दिन उसको एक अच्छा मौका मिला और वह अपनी पत्नी के सामने आया। फिर रोते-रोते उसने सारी कहानी अपनी पत्नी से बता दी। राजकुमार बने सामन्तकुमार से यह भी कहने के लिए कहा कि एक बार स्वर्णिम हिरण का रूप उसे दिखा दे। थोड़ी देर के बाद सामन्तकुमार आ गया। उस औरत ने सामन्तकुमार से वही कहा जो

उसके पति ने बताया था। सामन्तकुमार को यह नहीं मालूम था कि क्रूर कर्म का फल भोगने का अन्तिम समय आ गया है। उसने राजकुमार का असली अस्थि-पंजर छोड़कर एक स्वर्णिम हिरण का रूप लिया और इधर-उधर उछलने कूदने लगा। तब मौका पाकर स्वर्णिम शुक ने अपने खूद के अस्थि-पंजर में प्रवेश किया। स्वर्णिम शुक ने अब असली राजकुमार का रूप धारण कर लिया। उसने अपने कमरे में तुरन्त जाकर भाला निकाला और उस हिरण को मार डाला। इस तरह सामन्तकुमार के जीवन का अन्त अपने क्रूर कर्म का फल भोगकर हुआ।

कठिन शब्दों के अर्थ

स्वर्णिम	= सुनहला।
शुक	= तोता, सुग्गा।
विद्याभ्यास	= विद्या का अभ्यास।
अस्थि-पंजर	= हड्डियों का ढाँचा।
निर्मम	= निष्ठुर, कठोरतापूर्वक किया जानेवाला।

प्रश्न-अभ्यास

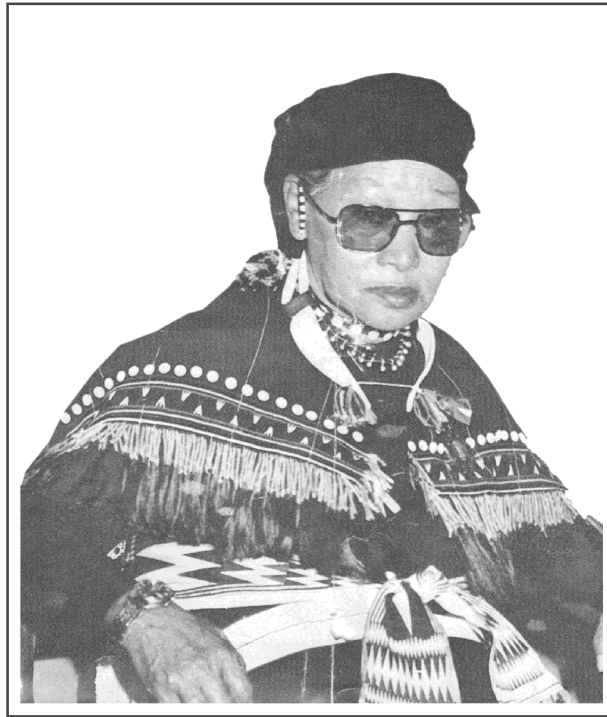
1. “ मित्र मिलना आसान है, पर मित्रता का पालन करना कठिन काम है।”
उपर्युक्त पंक्ति का तात्पर्य क्या है ?
2. सामन्तकुमार का कथन – “ तब तो तुम पहले विद्याभ्यास कर दिखाओ।” में निहित सामन्तकुमार के मन का भाव लिखिए।

3. सामन्तकुमार ने अपना अस्थि-पंजर आग में क्यों जला दिया ? अन्त में उसका फल क्या हुआ ?
4. 'एक दिन सच्चाई तुमको मार डालेगी।'

यह कथन किसने किससे कहा ? क्या यह कथन सही निकला ?
5. राजकुमार के कहने से छसकी पत्नी ने सामन्तकुमार से क्या रूप दिखाने को कहा ? उसका फल क्या हुआ ?
6. 'मित्र और मित्रता-कर्म का फल' पाठ का सारांश लिखिए।
7. राजकुमार और सामन्तकुमार दोनों के बारे में आपके विचार व्यक्त कीजिए।
8. 'मित्र और मित्रता -कर्म का फल' पाठ लोगों को क्या उपदेश देता है ?
9. आपको कौन-सा मित्र चाहिए— राजकुमार जैसा या सामन्तकुमार जैसा? युक्ति-युक्त पुष्टि कीजिए।

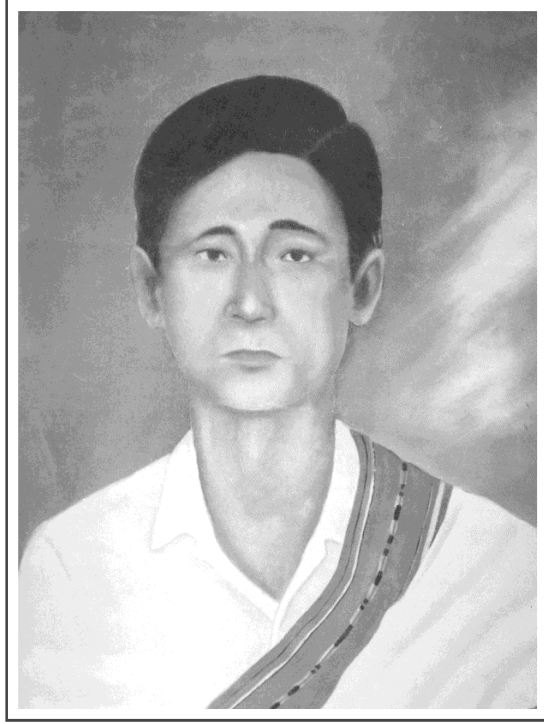


पाठ – छह
रानी गाइडिन्ल्यू



इतिहास साक्षी है कि मणिपुर के पर्वतीय क्षेत्र में एक वीरांगना ने नद जन्म लिया था। उन्होंने अंग्रेजों को मणिपुर से भगाने का भरसक काम किया था। इस स्वतंत्रता g 7r H\$Zm hJrB6Zë` &CZH\$mOŸ 26 जनवरी, 1915 को तमेइलोइ जिले के नुइखाओ नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम लोत्तोहानाइ था। वे अपने माँ-बाप की तीसरी औलाद थीं। वे एक साहसिक नारी थीं। बचपन में भी उनके द्वारा किए वीरतापूर्ण कार्यों को देखकर लोग बहुत प्रभावित हुए थे। तेरह वर्ष की आयु में ही वे

जादोनड की अनुयायी हो गई थीं। जादोनड गाइडिनल्यू के चचेरे भाई थे। जादोनड बचपन से ही काड्बीरोन में रहते थे। इसलिए उन दोनों की मुलाकात नहीं हुई थी। जादोनड ने अंग्रेजों को अपनी आँख का काँटा समझा था। वे अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना चाहते थे। इसलिए जादोनड गुप्तावस्था में कुछ पर्वतीय महिलाओं को प्रशिक्षण दे रहे थे। गाइडिनल्यू जादोनड से मिलने के लिए काड्बीरोन गई थीं। जादोनड ने गाइडिनल्यू को अच्छी तरह से पहचान लिया। गाइडिनल्यू ने भी उस प्रशिक्षण में भाग लिया। जादोनड ने उनके हाथ बहुत काम सौंपे। स्वतंत्रता आन्दोलन का मुख्य कार्य भी जादोनड ने गाइडिनल्यू को सौंपा।



जादोनड ने अंग्रेज सरकार के विरुद्ध गुप्त काम किया। अंग्रेज सरकार को इसका पता चल गया। अंग्रेज सरकार ने उसे बेगारी करने के लिए मजबूर किया। उन्होंने क्रोधित होकर अंग्रेज सरकार के एक अधिकारी को जान से मार डाला। अंग्रेज सरकार ने जादोनड को पकड़ा और फाँसी पर लटका दिया।

जादोनड के बलिदान के बाद गाइडिनल्यू ने उसका काम सम्भाला और अंग्रेजों के खिलाफ अथक आन्दोलन करने की शपथ ली। उन्होंने नागा जाति के लोगों को इकट्ठा किया और जादोनड के चले रास्ते पर चलने लगी। जादोनड के सिद्धान्त के पीछे चलकर उन्होंने उनकी इच्छा पूरी करने की कोशिश की। उन्होंने गुप्त रूप में अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन किया और कहा – “ हम किसी के अधीन नहीं हैं। अंग्रेज हम पर शासन नहीं कर सकते।” उत्तर कछार, मणिपुर के पश्चिमी जिले और नागालैण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध आन्दोलन शुरू हो गया। वे उस विद्रोह की अग्रणी थीं। अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करने का जाल फैलाया। उन्हें पकड़ सकनेवाले पर पाँच सौ रुपए का इनाम भी घोषित किया गया। वे गुप्त रूप में गाँव-गाँव घूम कर विद्रोह का प्रचार करती रही और अंग्रेज सरकार उन्हें पकड़ नहीं पाई।

गाइडिनल्यू ने हडगुम में एक किला बनवाकर उसमें चुपचाप काम किया। अंग्रेज सरकार को उसका गुप्त समाचार मिल गया। अंग्रेजों ने वहाँ पर आक्रमण किया। उनको पकड़ने के लिए असम राइफलस के जवानों को काम में लाया गया। जवानों ने बहुत अत्याचार और अन्याय किए। नागा जनजाति के लोगों को जीवित जलाया गया। अन्य कई लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। किशोरियों और स्त्रियों को अपमानित किया गया। अंग्रेजों ने कई महीने तक दमन नीति चलाई।

17 अक्टूबर, 1932 के दिन नागालैण्ड के एक गाँव से उन्हें पकड़ लिया गया। उनपर कई आरोप लगाए गये। सन् 1935 में अंग्रेज सरकार ने गाइडिनल्यू को मौत की सजा सुनाई। उन्होंने इंग्लैण्ड की महारानी से अपील की। फलतः उनकी मौत की सजा आजीवन कारावास में बदल दी गई।

सन् 1937 में पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने शिलांग जेल में गाइडिनल्यू से भेंट की। उनकी अवस्था देखकर नेहरू को बड़ा दुख हुआ। इसलिए उन्हें मुक्त कराने के लिए अंग्रेज सरकार से निवेदन किया, परन्तु अंग्रेज सरकार ने उनकी बात नहीं मानी। नेहरू ने उन्हें ‘कबुई

जनजाति की रानी’ कहकर सम्बोधित किया। तब से लोग गाइडिन्ल्यू को ‘रानी गाइडिन्ल्यू’ के नाम से पहचानने लगे। 15 अगस्त, 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली। भारत के आज़ाद होने के तुरन्त बाद भारत सरकार ने रानी गाइडिन्ल्यू को जेल से मुक्त किया और उन्हें आजीवन पेंशन प्रदान किया।

सन् 1956 तक उन्होंने समाज की सेवा की। लेकिन आगे चलकर अपनी इच्छा के अनुकूल उन्होंने भारत सरकार के विरुद्ध काम किया। छह वर्ष तक लगातार संघर्ष करने के पश्चात उन्होंने भारत सरकार के साथ समझौता किया। सन् 1972 में भारत सरकार ने उन्हें स्वतंत्रता-सेनानी घोषित किया और ‘ताम्र-पत्र’ प्रदान कर सम्मानित किया।

17 फरवरी, 1993 को इस स्वतंत्रता सेनानी का देहान्त हुआ। उनके त्याग और जीवन में हुई संघर्ष की प्रेरणा को हम सब भारतवासी कभी नहीं भूल पाएँगे।

कठिन शब्दों के अर्थ—

भरसक	= जहाँतक संभव हो।
औलाद	= सन्तान, वंशज।
अनुयायी	= अनुचर, अनुसरण करनेवाला।
आँख का काँटा	= कष्ट होना, शत्रु होना, कार्य में बाधा उत्पन्न करना।
बेगारी	= बलात् श्रम, मजदूरी न देकर जबर्दस्त काम कराना।
मज़बूर	= विवश, लाचार, निःसहाय, जिसपर जबर किया गया हो।
जान से मार डालना	= हत्या-करना, मार डालना।
खिलाफ	= विरुद्ध, विपरीत।
अथक	= न थकनेवाला।
शपथ	= कसम, सौगंध।

अग्रणी	= अगुआ, आगे चलनेवाला, नेता।
किशोरियों	= सुन्दर युवतियों।
अपमानित किया	= तिरस्कृत किया, अपमान किया।
आरोप	= दोष-संस्थापन।
आजीवन कारावास	= उम्रभर कैद में रहना।
भेंट	= मुलाकात, उपहार।
प्रदान किया	= दे दिया, इनाम / पुरस्कार दिया।
अनुकूल	= पक्ष में रहनेवाला।
समझौता	= आपस का करार या निश्चय, निपटारा, निर्णय।

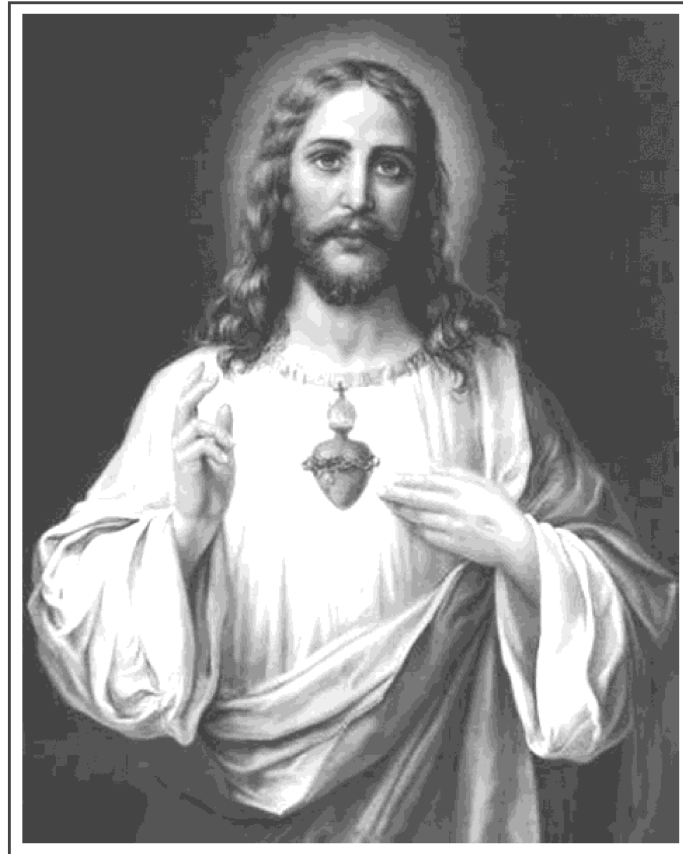
प्रश्न-अभ्यास

1. गाइडिन्ल्यू का जन्म कब और कहाँ हुआ था? उनका बचपन कैसा था और वे जादोनङ् की अनुयायी क्यों हुईं ?
2. जादोनङ् के मरने के बाद गाइडिन्ल्यू के किए कार्यों का चित्रण कीजिए।
3. जादोनङ् कौन थे ? गाइडिन्ल्यू से उनका क्या संबंध था ? अंग्रेजों ने उनको फाँसी पर क्यों लटका दिया ?
4. आजीवन कारावास क्या है ? गाइडिन्ल्यू आजीवन कारावास से कब मुक्त हुईं ?
5. जवाहरलाल नेहरू ने गाइडिन्ल्यू को किस नाम से सम्बोधित किया और आगे चलकर वे किस नाम से जानी जाने लगीं ?

6. 'रानी गाइडिन्ल्यू' पाठ का सारांश लिखिए।
7. मणिपुर का एक मानचित्र खींचकर तमेङ्लोङ् जिला, नुङ्खाओ और काङ्बीरोन निर्धारित कीजिए।
8. अपने गुरुजनों से पूछकर जादोनङ् के बारे में और जानकारी प्राप्त कीजिए और उसे कक्षा में सुनाइए।
9. भारत में अंग्रेजों के राज की जानकारी अपने अध्यापक से पूछकर समझ लीजिए।



पाठ – सात ईसा मसीह

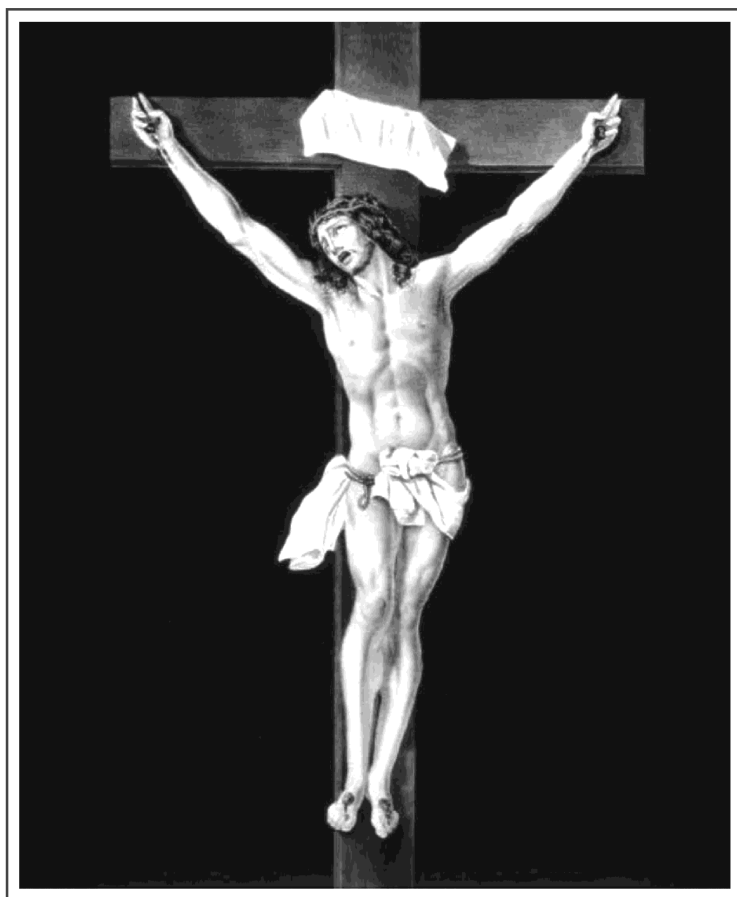


बेथलेहम में हेरोड महान की मृत्यु के चार वर्ष पहले एक यहूदी परिवार में एक दैविक लड़का एक अस्तबल में पैदा हुआ था। ईसाई धर्म के अनुसार उन्हें होली ट्रिनिटी(पवित्र त्रयक) के द्वितीय पुरुष बताया जाता है। उनके जन्म के बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त नहीं है। मेथिउ और ल्युक में केवल यह उल्लेख किया जाता है कि

जेरुजलम में एक दंपति के घर एक लड़का पैदा हुआ। उस लड़के ने करीब तीस वर्ष की अवस्था से धर्म प्रचार करना शुरू किया। उस लड़के के जन्म से संबंधित जानकारी इस प्रकार है कि आज से 2000 वर्ष पहले भगवान ने एसराएल में रहनेवाली मेरी नामक एक कुमारी के पास एक फरिश्ता भेजा। उस फरिश्ते ने मेरी से अपनी कोख में एक कुमारी की कोख में एक बच्चा धारण कर जन्म देने का आदेश दिया। मेरी की सगाई जोसफ नाम के एक बढ़ई के साथ हुई थी। जब जोसफ को पता चला कि मेरी ने कुमारी अवस्था में गर्भधारण कर लिया है तब उस फरिश्ते ने जोसफ से मेरी को शादी कर अपनी पत्नी बनाने का आदेश दिया। जोसफ ने वह आदेश मान कर मेरी को बेथलेहम में नामकरण के लिए ले आए। वहाँ पहुँचकर मेरी ने एक दैव लड़के को जन्म दिया जिसका नाम था 'यीशु' अर्थात् 'जिसस'। विद्वानों ने राजा हेरोड महान को बताया – “ यीशु सम्पूर्ण एसरायल में ही नहीं, वरण सारे संसार में राज करेंगे।”

राजा हेरोड बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने यीशु को मार डालने की षडयंत्र रचना शुरू कर दी। फिर फरिश्ते के आदेश से जोसफ यीशु को परिवार सहित मिश्र देश में लाए। राजा हेरोड महान के मरने के बाद ही जोसफ और उनका परिवार फिर से एसरायल वापस आए और यीशु को नजारत नगर में रखा गया। यीशु ने वहाँ एक पर्वत पर बैठकर अपने लोगों को धार्मिक सिद्धान्त तथा धार्मिक कथा सुनाई। यीशु ने कहा – “ अपने शत्रु से भी प्रेम करो। ईश्वर पर श्रद्धा रखो। दूसरे लोग तुमको जिस तरह व्यवहार कराना चाहते हैं उसी तरह तुम भी दूसरों के प्रति व्यवहार करो। ”

लोग उनसे बहुत प्रभावित हुए। हर जगह उनके गुणों की प्रशंसा और चर्चा हुई। दिन व दिन उनकी शक्ति बढ़ती गई। हवा तथा सागर तक उनका कहना मानते थे। एक बार वे अपने शिष्यों के साथ गलेलीं सागर में जा रहे थे तब अचानक सागर में तूफान उठने लगा, लहरें उठने लगी; सब लोग घबराने लगे। लोगों की घबराहट को देखकर यीशु ने तूफान से शान्त होने को कहा। तूफान शान्त से गया। इस तरह उन्होंने कई स्थलों पर अपनी शक्ति प्रयोग कर कल्याण का मार्ग दिखाया।



यीशु का एक मित्र था जिसका नाम लजारस था। वह अपनी बहनें मेरी और मारथा के साथ बेथानी में रहता था। कुछ दिनों के बाद यीशु को पता चला कि उनके मित्र लजारस की मृत्यु हो गई। वे बेथानी में गए और उन्होंने अपने मरे हुए मित्र लजारस को चार दिनों के बाद पुनः जीवन देकर जीवित किया। उनके गुण और शक्ति का समाचार हर जगह फैल गया। लोग यीशु को “भगवान का पुत्र” कहकर पुकारने लगे। वह सब देखकर और सुनकर यहूदी नेताओं की छाती पर साँप लोट गए। इसलिए यहूदी के अग्रगण्य लोगों और नेताओं ने उनको मारना चाहा। उन्होंने यीशु को ईश-निन्दक कहकर पकड़वाया और मुकदमा चलाया। तत्कालीन रोमन गवर्नर पाइलेट ने यीशु को सूली पर चढ़ाकर मार डालने का हुक्म दिया। पाइलेट के आदेशानुसार यीशु को 36 वर्ष की आयु में सूली पर चढ़ा कर मार डाला।

कठिन शब्दों के अर्थ—

कोख	=	उदर, पेट, गर्भाशय
फरिश्ता	=	देवदूत
दैव	=	देवता संबंधी, देवता की ओर से होनेवाला
षडयंत्र	=	साजिश, कुचक्र
श्रद्धा	=	आदरपूर्ण आस्था या विश्वास
तूफान	=	बहुत तेज आँधी जिसमें वर्षा भी हो
अग्रगण्य	=	श्रेष्ठ, प्रमुख
मुकदमा	=	अदालत में पेश किया गया मामला, दावा, नालिश
तत्काली	=	उस समय का, उन दिनों का
सूली	=	प्राण दंड देने की एक विधि, लोहे का नुकीला छड़

प्रश्न-अभ्यास

1. यहूदी परिवार में जन्मे उस दैविक लड़के को ईसाई धर्म में क्या माना जाता है ? उस लड़के के सम्बन्ध में मेथिउ और ल्यूक के विचार लिखिए।
2. मेरी ने किस अवस्था में अपनी कोख में बच्चा धारण किया ? जन्म होने पर उस लड़के का क्या नाम रखा गया ?
3. राजा हेरोड महान क्यों क्रोधित हुए ? उसने यीशु के विरुद्ध क्या किया ?
4. यीशु का उपदेश क्या है और उन्होंने लोगों को क्या-क्या चमत्कार दिखाया ?

5. यीशु को क्यों मारा गया ?
6. यीशु की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
7. यीशु के जन्म से संबंधित असाधारण बात क्या है ? लिखिए।
8. प्रमुख धर्म-सम्प्रदाय हिन्दू, मुसलिम, सिख, ईसाई, बौध, और जैन के मुख्य संस्थापकों और धार्मिक ग्रंथों के नाम लिखिए।
9. अपने अध्यापक से पूछकर ईसाई के धार्मिक ग्रंथ के बारे में दस वाक्य लिखिए।



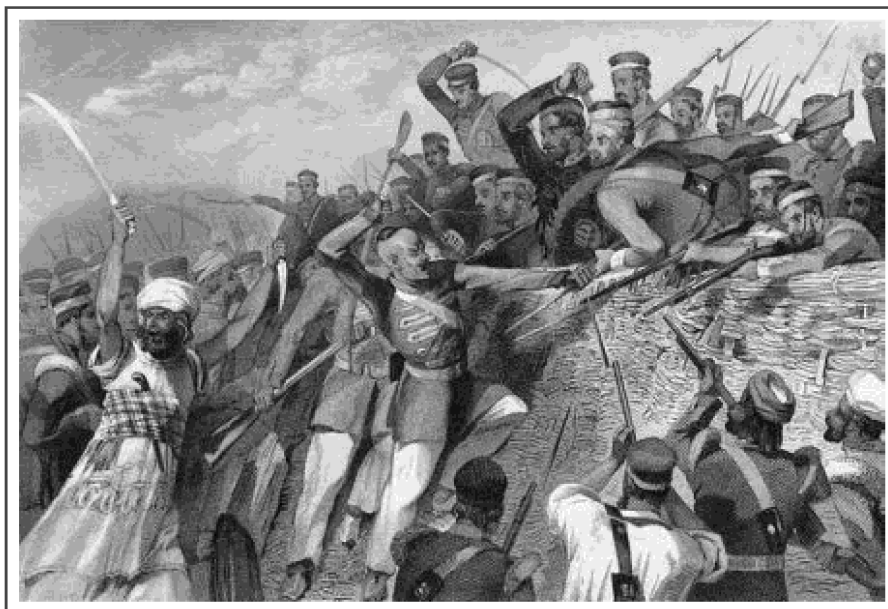
पाठ – आठ

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम – उद्गम और अन्त

19 वीं शताब्दी के दौरान भारतवासियों में राष्ट्रीय चेतना का उदय भारत के ऐतिहासिक विकास के अत्यन्त महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक है। भारतवासियों की भारतीय होने की भावना युगों पुरानी थी। इस तरह के राष्ट्रवाद का उदय कैसे हुआ ? इसके कई कारणों में से प्रमुख बातें इस प्रकार हैं।

भारत पर अंग्रेजों की व्यापक विजय के कारण भारतवासियों को अपनी सत्ता के अधीन रखकर शासन किया। अंग्रेजों ने अपनी नीति के आधार पर टेलीग्राफ और डाक व्यवस्था लाकर उनका औपनिवेशिक नियंत्रण बनाए रखा। भारत के बाजारों में उनका तैयार किया सामान लाकर भारतीय आर्थिक अवस्था पर शोषण नीति चलाई। अंग्रेजों ने भारत पर पाश्चात्य शिक्षा ला दी जिससे भारतवासियों के ज्ञान की वृद्धि तो हुई। समय के अनुसार रुचि और चाल-चलन की दृष्टि से शरीर भारतीय होकर भी मन अंग्रेजों का हो गया। शिक्षित भारतीय यूरोप के सामाजिक विचारों को समझने लगे। प्लेटो, हीगल, कान्ट, अरस्तू आदि की कृतियों के द्वारा मुक्ति और स्वतंत्रता के विचारों का अध्ययन करने लगे। इस तरह शिक्षित भारतीय एक दूसरे के संपर्क में आए और जन समुदाय के बीच राष्ट्रीय चेतना का प्रचार करना शुरू किया। वास्तव में अंग्रेजी शिक्षा ने उस चिनगारी का काम किया जिसने भारतवासियों पर एक नए मोड़ अपनाने का मौका दिया।

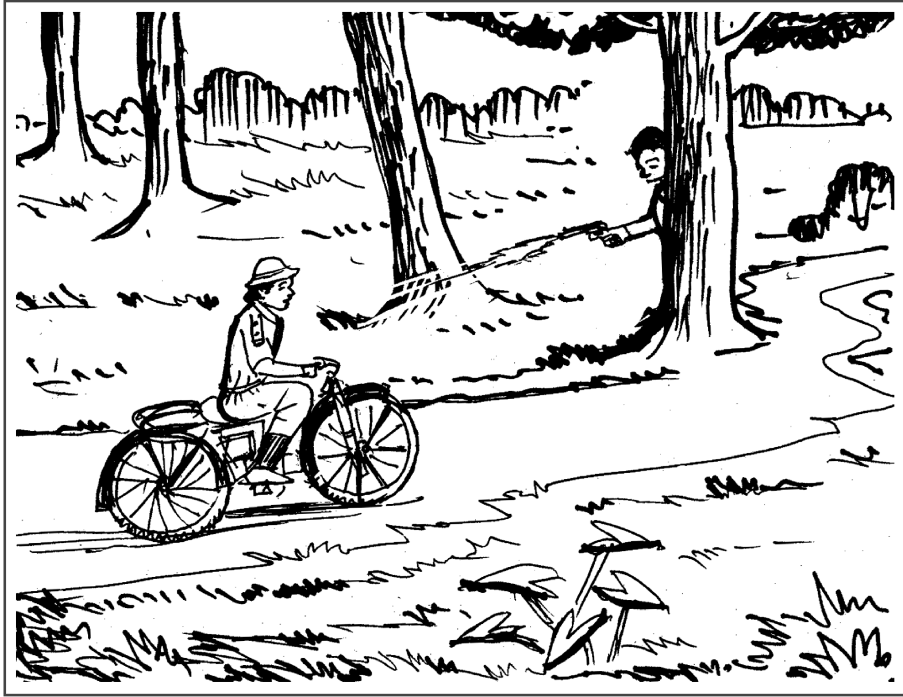
विभिन्न सामाजिक, धार्मिक तथा अन्य सांस्कृतिक आन्दोलनों के माध्यम से भारत में राष्ट्रीय चेतना जागृत कराने का भरसक प्रयत्न किया। इससे बढ़कर समाचार-पत्रों तथा प्रेस ने भी बड़ी अच्छी भूमिका निभाई।



जब भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का विकास हुआ तब महात्मा गांधी का दक्षिण अफ्रीका से भारत-भूमि पर प्रादुर्भाव हुआ। गांधी के भारत आने के पहले भारत के कई मुख्य शहरों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन आयोजित किए गए। भारतीय कांग्रेस के प्रथम बीस साल के सम्मेलन में अग्रणी नेताओं की आशा अंग्रेज सरकार ने निराशा में बदल दी। अंग्रेजों ने अपने शासन में अमानवीय शोषण नीति अपनाई। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय शिक्षित वर्ग ने साधारण जनता के दिलों में राष्ट्रीय प्रेम उत्तेजित किया। बंकीमचन्द्र चट्टोपाध्याय के 'वन्दे मातरम' ने क्रांतिकारियों के दिलों में राष्ट्र के प्रति बलिदान की भावना जगाई ही नहीं, अपितु उन्होंने सक्रिय रूप से आत्मा उत्सर्ग की।

उस काल के प्रमुख नेताओं में बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल, लाला राजपट राय, अरबिन्दो घोष आदि नाम उल्लेखनीय हैं। वे लोग उग्रवादी थे। इनके अलावा सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता आदि नरम मार्ग अपनाने वाले नेता भी थे। उनके विचार थे कि अंग्रेज सरकार भारतवासियों की माँगों को राजनैतिक विचार के आधार पर पूरी करेगी।

तत्काल, भारत के बाहर विश्व के अन्य स्थानों में घटी घटनाओं का गहरा प्रभाव भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर पड़ा। सन् 1896 में इथ्योपिया सैनिकों ने इटली पर संघर्ष कर जीत पाना, जापान द्वारा रूस पर आक्रमण, आयर्लैण्ड द्वारा ब्रिटिश पर आन्दोलन छेड़ना आदि भारत के लिए एक बड़ी शिक्षा थी। इन सब ने भारतीय नेताओं की योजनाएँ मजबूत कर दीं।



भारत भर में क्रान्ति की हलचल सन् 1857 के मार्च में बंगाल के बैरकपुर से हुई। वहाँ मंगल पाण्डेय नामक एक भारतीय सिपाही ने खुल्लमखुल्ला अपने अंग्रेज अधिकारी को गोली मार दी। अंग्रेजों ने तात्कालीन क्रान्ति को कुछ सालों के लिए दबा दिया। भारत में नरमपंथी और गरमपंथी की क्रान्ति की गतिविधि जारी रही। सन् 1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा किए गए बंगाल विभाजन से अंग्रेजों की 'फूट डालो और शासन करो' नीति का रूप बिल्कुल साफ हो गया। इस नीति ने सांप्रदायिक समस्या को कई गुना बढ़ा दिया। पूरे बंगाल में शोक छा गया। कई स्थानों में बैठकें हुईं। बंगाल

में यातायात तथा व्यापार का काम ठप हो गया। दुकानें बन्द थीं। इसके नेता थे सुरेन्द्र नाथ बेनर्जी, बिपिन चन्द्र पाल और अब्दुल रसुल। इस दिन को कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ने एकता और समभाव दिवस कहा। इससे लोगों में राष्ट्रीय भावना और तीव्र हो गई। स्वदेशी और बहिष्कार का कार्यक्रम और तेज कराया गया। नरम पंथी और गरम पंथी के नेताओं ने बंगाल विभाजन के विरुद्ध आन्दोलन किया। सन् 1905 को बनारस में अखिल भारत कांग्रेस अधिवेशन श्री गोपाल कृष्ण गोखले की अध्यक्षता में हुआ। दक्षिण भारत में भी विऑसी पिल्लाई के नेतृत्व में स्वदेशी और बहिष्कार का आन्दोलन शुरू हुआ। स्कूल-कॉलेजों ने अंग्रेजी सामान का प्रयोग करना छोड़ दिया। सन् 1906 में दादाभाई नाओरोजी के नेतृत्व में कलकत्ता में हुए अधिवेशन में गरम पंथी और नरम पंथी दोनों के विचारों में अन्तर आने लगा। यह अधिवेशन स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रसंग में एक मुख्य ऐतिहासिक प्रसंग हुआ।

सूरत में हुए सन् 1907 के अधिवेशन में भी दोनों पंथियों के नेताओं के बीच काफी मतभेद हुआ। नरम पंथी ही के नेता खुले आम आन्दोलन में भाग लेते रहे। सन् 1907 में लाला लाजपत राय को पकड़ कर बर्मा के जेल में रखा गया। बाद में उन्हें छोड़ दिया गया। फिर सन् 1908 में बिपिन चन्द्र पाल को छः महीने के लिए पकड़ कर कारागार में रखा गया। बाल गंगाधर तिलक को भी पकड़ कर बर्मा के जेल में रखा गया।

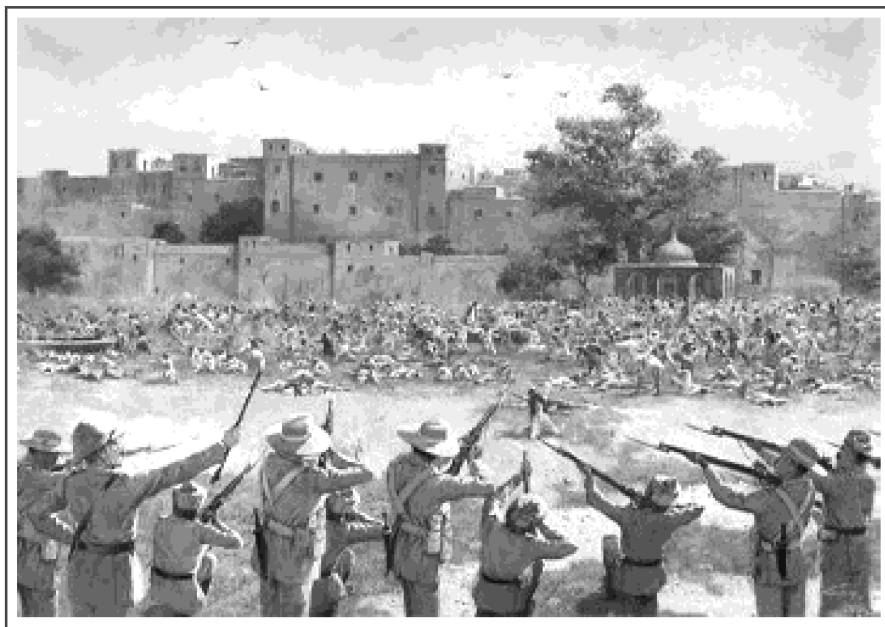
प्रथम विश्व महायुद्ध के दौरान क्रान्तिकारी गतिविधियाँ बर्लिन में केन्द्रित थीं। सन् 1915 में वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, लाला हरदयाल तथा भूपेन्द्र दत्त के नेतृत्व में विदेशी कार्यालय की सहायता से भारत को स्वतंत्र कराने की आशा में जर्मन में आई.आई.सी. अर्थात् इण्डियन इण्डिपेण्डेन्स कमेटी की स्थापना की गई। दिसम्बर, सन् 1915 में राजा महेन्द्र प्रताप, ओबैदुल्लाह सिंधी तथा बर्कतुल्लाह ने काबुल में अंतरिम सरकार का गठन करने की तैयारी की। इसे जिमरमैन योजना के नाम से जाना

गया। अन्त में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग को स्थापना हुई। यह लीग बहुत आसानी से साम्प्रदायिक और पृथक्वादी दृष्टिकोण का शिकार हो गयी।

माली-मिण्टो सुधार ने भारतीय प्रशासनिक ढाँचे में परिवर्तन लाने की घोषणा की। इस सुधार से नरम पंथी नेताओं को बड़ी निराशा हुई क्योंकि इसने हिन्दू और मुसलमानों के बीच फूट डालने का प्रयत्न किया। सन् 1911 को दिल्ली में आयोजित शाही दरवार में ब्रिटिश साम्राज्य के राजा जर्ज पंचम और उनकी महारानी शामिल थे। मुजफ्फरपुर में खुदिराम बोस तथा प्रोफुल्ला चाकी ने आदालत में बम फेंके। चाकी ने आत्महत्या की और खुदिराम बोस पर न्यायिक जाँच करने के बाद उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया। कलकत्ता के एक घर में छापा मारकर पुलिस ने अरबिन्दो घोष और उनके भाई वीरेन्द्रघोष को पकड़ा। फिर भी भारत के कोने-कोने में उग्रवाद का काम जारी रहा।

भारत के बाहर विदेशों में भी स्वतंत्रता आन्दोलनकारी की गतिविधि कम नहीं थी। यूरोप के उग्रवादियों से सम्पर्क रखकर भारत की स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी। उत्तर अमेरिका में उन्होंने भारतकी मुख्य भाषाओं में अपना मुखपत्र 'गदर' नामक पत्रिका निकाली।

आगे बढ़कर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और क्रान्तिकारियों के कदम बदले। स्वतंत्रता-संघर्ष के इतिहास में नया पृष्ठ खुला और गांधी जी का आविर्भाव हुआ। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में पन्द्रह साल रहकर अंग्रेजों का वहाँ के लोगों पर किए अत्याचार को रोका। बाद में उनके भारत आने से स्वतंत्रता-संघर्ष में एक परिवर्तन आया। उनके दो मजबूत विचार हैं – अहिंसा और सत्याग्रह। इन दोनों हथियारों द्वारा चम्पारन जिले में नील की खेती करनेवालों की समस्या का सविनय हल किया गया। गुजरात में खेड़ा के किसानों के मामले में भी सत्याग्रह द्वारा सरकार के साथ समझौता कराया गया। इस दौरान सरदार बल्लभ भाई पटेल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण नेता के रूप में उपस्थित हुए।



सन् 1920 में गांधीजी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया। इस आन्दोलन की पृष्ठभूमि की तैयारी प्रथम विश्व युद्ध, रौलट विधि, जालियाँवाला बाग नर संहार तथा मॉण्टेग्यू चेम्पफॉर्ड सुधार आदि पर आधारित होकर की। परन्तु इस आन्दोलन से भारत की स्थिति इतनी बेकाबू हो गई कि गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा में पुलिस ने कांग्रेस स्वयं-सेवकों पर गोली चलाई। इसके उत्तर में क्रोधित भीड़ ने वहाँ की पुलिस चौकी पर आग लगा दी; उसमें बाईस पुलिस कर्मचारी जिन्दा जल कर मर गए। इस परिस्थिति में गांधीजी ने यह आन्दोलन कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया।

सन् 1929 में लाहौर में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुए कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव रखा। पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति हेतु सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरंभ करने के लिए गांधी जी पर नेतृत्व का भार सौंपा गया। रावी नदी के तट पर जवाहरलाल नेहरू ने भारत का तिरंगा झण्डा फहराया। 12 मार्च, 1930 को हुए सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने भारत में एक गंभीर रूप लिया और सरकार को अन्त में

समझौता करने को बाध्य किया। लंदन में नवम्बर 1930 से जनवरी 1931 तक प्रथम गोल मेज सम्मेलन का आयोजन हुआ। उस समय कांग्रेस के अधिकांश नेता जेल में थे। इसलिए देशी रियासतों के प्रतिनिधि, मुस्लिम लीग नेता, दलित वर्ग, सिक्ख तथा अन्य लोगों ने एकत्रित होकर काम किया। इसी बीच शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को लाहौर षडयंत्र के इलजाम में फाँसी की सजा दी गई।

सन् 1941 में सुभाष चन्द्र बोस के जापान पहुँचने के बाद रासबिहारी बोस के नेतृत्व में कप्तान मोहन सिंह ने जापानियों द्वारा पकड़कर रखे भारतीय ब्रिटिश फौजों को मिलाकर भारत की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। भारत के लोगों के सक्रिय एवं पूर्ण सहयोग से अंग्रेज सरकार परेशान थी। द्वितीय विश्व युद्ध में भारत के दक्षिण-पूर्वी सीमा पर जापान का खतरा बढ़ रहा था। नेताजी सुभाष ने आजाद हिन्द फौज में नई जान दी। उन्होंने 'दिल्ली चलो' का नारा लगाया। लेकिन 1945 में जापान के दो शहरों— हिरोशिमा और नागासाकि पर एटम बम गिराने से जापान की हार हुई। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु भी एक नाटकीय ढंग से हवाई जहाज दुर्घटना में ही गई। अन्त में ब्रिटिश सरकार को बाध्य होकर भारत को 15 अगस्त, 1947 की मध्य रात्रि को स्वतंत्रता प्रदान दी करनी पड़ी।

कठिन शब्दों के अर्थ—

दौरान	= दौर, चक्र।
राष्ट्रवाद	= राष्ट्रीय स्वतंत्रता की नीति।
औपनिवेशिक	= उपनिवेश संबंधी।
नियंत्रण	= नियम से बाँध कर रखना।
शोषण नीति	= सोखने की नीति, दूसरों के श्रम का अनुचित लाभ उठाने की नीति।

प्रादुर्भाव हुआ	= प्रकट हुआ।
अपितु	= बल्कि, किन्तु।
सक्रिय रूप से	= क्रिया में लगे हुए रूप से।
उत्सर्ग किया	= त्याग दिया, बलिदान किया।
तत्काल	= उसी समय, फौरन।
खुल्लमखुल्ला	= खुल कर सब के सामने, सब को सूचित करते हुए।
तात्कालीन	= उस समय का।
फूट डालना	= खण्ड करना, वैर / अनबन करना।
ठप हो गया	= पूर्णत बन्द हो गया।
बहिष्कार का	= बाहर निकालने का, दूर करने का, त्याग करने का।
अंतरिम	= बीच की अवधि का, मध्यवर्ती, अस्थायी।
स्थगित कर दिया	= रोका दिया।
बाध्य किया	= पीड़ित किया, मजबूर किया, विवश किया।
इलजाम	= अभियोग, दोषारोपण।

प्रश्न-अभ्यास

1. अंग्रेजों के अधीन रहकर भारतवासियों के मन में उत्पन्न भावों को पठित पाठ के आधार पर लिखिए।
2. भारतवासियों का अंग्रेजों के विरुद्ध किए गए कार्यों का चित्रण कीजिए।

3. स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान शहीद हुए भारतवासियों के नाम लिखिए।
4. अंग्रेजों की दमन नीति के बारे में लिखिए।
5. भारत कब स्वतंत्र हुआ ?
6. भारत के स्वतंत्रता-संग्राम की कहानी संक्षेप में लिखिए।
7. स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान शहीद हुए पाँच देशभक्तों के नाम लिखिए।
8. अपने अध्यापक से पूछ कर पाठ में उल्लिखित देश भक्तों के बारे में पाँच-पाँच वाक्य लिखिए।
9. मणिपुर में आज़ाद हिन्द फ़ौज का स्मारक कहाँ है ?
10. मणिपुर की स्वतंत्रता की रक्षा में शहीद हुए मणिपुर के प्रमुख पाँच देशभक्तों के नाम लिखिए।
11. स्वतंत्रता-संग्राम के प्रमुख दस देश भक्तों के फोटो/चित्र खोजकर एक चित्रमाला तैयार कीजिए और उसे कक्षा में दिखाइए।

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह —

- क. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थानों, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।
- ख. स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।
- ग. भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे।
- घ. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।
- ङ. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।
- च. हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।
- छ. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं — रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे।
- ज. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।
- झ. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।
- ञ. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

निर्देश

अध्यापकों को चाहिए कि वे संविधान के भाग ४ क, अनुच्छेद-५१ क में उल्लिखित इन मूल कर्तव्यों को छात्रों को समझाएँ और कण्ठस्थ कराएँ।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग,
विंध्य-हिमाचल, जमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा ।
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।

